कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल।

भक्तिकाल पर संस्कृत साहित्य का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है। इस काल का साहित्य विषय-वस्तु सिद्धांत तथा शैली सभी दृष्टियों से संस्कृत साहित्य का ऋणी है। भक्तिकाल की सभी काव्यधारायें - सन्त काव्य, सूफी काव्य, कृष्ण भक्ति साहित्य तथा राम भक्ति साहित्य के उपजीव्य ग्रंथ 'भागवत' तथा रामायण है। कोई भी पूर्ववर्ती साहित्य अपने परवर्ती साहित्य के लिए जहां एक ओर पृष्ठभूमि तैयार करता है वहां उसके भावी निर्माण के लिए ~~परवर्ती साहित्य के लिए जहां एक ओर~~ बहुत से उपकरण भी जुटा देता है। किन्तु भक्तिकालीन साहित्य इस कथन का सर्वथा अपवाद है। उसने अपने पूर्ववर्ती आदिकाल के साहित्य से प्रेरणा न लेकर सीधे संस्कृत के दर्शन साहित्य से प्रेरणा प्राप्त की। भक्तिकाल में भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के प्रवर्तक आचार्य संस्कृत के दिग्गज विद्वान थे और उन्होंने अपने संप्रदायों का दार्शनिक आधार संस्कृत साहित्य से तैयार किया।

वस्तुतः यह बड़े आश्चर्य की बात है कि भक्तिकाल और रीतिकाल का साहित्य अपने

पूर्ववर्ती हिन्दी साहित्य या अपभ्रंश साहित्य से प्रेरणा ग्रहण न करके संस्कृत वाङ्मय से प्रत्यक्षतः अपरिमित मात्रा में प्रभावित हुआ है। भक्तियुग का साहित्य संस्कृत के दर्शन शास्त्र और पुराणों से निरंतर प्रेरणा लेता रहा है तो रीति-काव्य संस्कृत के शृंगारी-काव्यों काव्यशास्त्र और कामशास्त्रीय परम्पराओं से परिचालित होता है। रीतिकालीन में संस्कृत के ज्योतिषी, सामुद्रिक शास्त्र, कामशास्त्र, शालिहोत्र तथा अन्य नाना विषयों के ग्रंथों का भी हिन्दी में रूपान्तर प्रस्तुत किया गया। इस दृष्टि से रीतिकाल भारतीय साहित्य और संस्कृत का पुनरुत्थान या जागरण काल ठहराता है। इस काल का लेखक संस्कृत साहित्य की विशाल ज्ञान-राशि को हिन्दी के माध्यम से जनसामान्य तक पहुंचाने के लिए अतीव चिन्तित एवं लालायित नजर आता है।

सन्त काव्य — सन्त कवियों में कबीर प्रतिनिधि कवि है। इनके साहित्य पर वेदान्त योग एवं तांत्रिक साहित्य का प्रभाव स्पष्ट है। कबीर ने शाक्तों की जो भी शिक्षा की है उसका संबंध कौल संप्रदाय से है शैवागमों से नहीं। कबीर रस का ब्रह्म बौद्धों के शून्यवाद से बहुत-कुछ प्रभावित है। निःसन्देह कबीर

Scanned with CamScanner

अनपढ़ थे। उन्होंने जो ज्ञानार्जन किया वह सब सत्संग और श्रवण द्वारा ही किया। कबीरदास नाथपंथ से अत्यधिक प्रभावित हैं और यह कहना अनुचित न होगा कि नाथपंथियों ने कबीर आदि सन्त कवियों के लिए बहुत कुछ काव्य भूमि पहले से ही तैयार कर दी थी। कबीर आदि सन्त ~~कवियों के विषय~~ जिनमें यौगिक प्रक्रियाओं का उल्लेख है उसका उद्भव-स्थल संस्कृत साहित्य ही है। हिन्दी के कुछ विद्वानों का कहना है कि हिन्दी के सन्त काव्य पर संस्कृत के भागवत, पुराण आदि काव्यों का प्रभाव निश्चित रूप से पड़ा है। सन्त कवियों के अद्वैतवाद पर वेदान्त का असंदिग्ध प्रभाव है कबीर की इस उक्ति में 'जल में कुम्भ कुम्भ में जल" वेदान्त दर्शन के सिद्धांत का प्रतिपादन है। कबीर के 'लालन की नहीं बोरियाँ पर संस्कृत के 'शैले शैले न माणिक्यम' का स्पष्ट प्रभाव है। इसी प्रकार कबीर की अनेक साखियों पर संस्कृत के नीति तथा सूक्तिमय श्लोकों का प्रभाव देखा जा सकता है। यहां इस संबंध में एक बात स्मरणीय है कि कबीर पर संस्कृत का जो प्रभाव है वह प्रत्यक्ष न होकर परम्परागत है।

सूफी प्रेमकाव्य — यद्यपि कुछ विद्वानों के अनुसार सूफी काव्य संस्कृत काव्य परम्परा की अपेक्षा फारसी की मसनवी शैली के अन्तर्गत

अधिक आता है पर भारत भूमि पर प्रणीत यह काव्य संस्कृत के प्रभावों से एकदम अछूता रहा हो ऐसी बात नहीं। सूफी काव्यों के कथानक हिन्दू घरों में प्रचलित प्रेम-कहानियां है। इन काव्यों का विषय संस्कृत से काफी प्रभावित है विद्वानों का विश्वास है कि जायसी के 'पद्मावत' पर जैन काव्यों तथा 'ढोला मारू रा दूहा' का पर्याप्त प्रभाव है डॉ कमल कुलश्रेष्ठ का कहना है कि जायसी के "पद्मावत' के निर्माण से पहले प्रभाव है।

शेष आगे